19

शतरंज के खिलाड़ी

(ललित निबंध)

बोलना/सुनना	पढ़ना	लिखना	व्याकरण	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• हिंदुस्तानी भाषा • मुहावरों-लोकोक्तियों का सही प्रयोग	• गद्य/कहानी • पात्रानुकूल भाषा • आगत शब्दों का सही उच्चारण	• स्थितियों का देशकाल के अनुसार वर्णन	• संवादों की गतिशीलता • शब्द-चयन और भाषा-वैविध्य • उर्दू-फ़ारसी-अरबी आदि भाषाओं के शब्दों का अर्थ-बोध तथा प्रयोग • विराम चिह्न • मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	• कर्मण्यता और अकर्मण्यता में अंतर स्पष्ट करना • विलासिता एवं निष्क्रियता से उबरना • परवशता के कारणों की पहचान • संस्कृति की पहचान

सारांश

यह कहानी वातावरण-केंद्रित है, जिसमें मीर और मिरज़ा आदि पात्रों के आचरण के माध्यम से तत्कालीन लखनऊ की परिस्थितियों की ओर संकेत किया गया है। उन परिस्थितियों में सामान्य नागरिक हो या शासक-वर्ग– सभी भोग-विलास में डूबे हैं। शासकों एवं अमीरों की अकर्मण्यता तथा दायित्व-विमुखता ने सामान्य जनता को भी अपनी गिरफ़्त में ले रखा है और मनोरंजन ने समाज का राजनीतिक अध:पतन कर दिया है। देश के कर्णधारों को इस प्रकार भोग-विलास में डूबे हुए दिखाकर प्रेमचंद गुलामी के कारणों की अभिव्यक्ति करते हैं। साथ ही, दायित्व-निर्वाह तथा कर्त्तव्यपरायणता के महत्त्व की ओर हमारा ध्यान ले जाते हैं।

मुख्य बिंदु

- कहानी में मुख्य रूप से कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण, संवाद-योजना, भाषा-शैली और परिवेश आदि तत्त्वों को दृष्टि में रखते हुए उसकी समीक्षा की जाती है। कभी-कभी इनमें से किसी एक तत्त्व पर विशेष बल दिया जाता है। इस कहानी में कहानी के अन्य सभी तत्त्व परिवेश को अभिव्यक्त करते हैं।
- कहानी में जिस भारत का चित्रण किया गया है, उसमें नाच-गाने, खेल-तमाशे, नशा-जुए, विलासिता में डूबे रहने वाला वर्ग सभी पर अपनी करनी का असर डालता है। आम आदमी, कलाकार, साहित्यकार, व्यापारी– सभी अपनी-अपनी हैसियत से विलासिता में डूबे हैं।
- कहानीकार कहना चाहता है कि यदि देश को गुलामी से बचाना है, तो प्रत्येक नागरिक को अपनी ज़िम्मेदारी का बोध होना चाहिए। प्रेमचंद शासक और प्रजा की इस स्थिति को दुखद मानकर उसका चित्रण करते हैं।
- कहानी में लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह को अंग्रेज़ों द्वारा कैद कर लेने का उल्लेख है। मीर-मिरज़ावाजिदअली शाह की गिरफ़्तारी पर दुखी न होकर उसका मज़ाक उड़ाते हैं। लेखक ने इस स्थिति की विडंबना का मार्मिक उल्लेख किया है।
- यह कहानी मिरज़ा साहब और मीर साहब जैसे मुख्य पात्रों के माध्यम से आलसी, अकर्मण्य एवं

कामचोर इन्सानों की वृत्ति को उजागर करती है। बाप-दादाओं की संपत्ति ने ऐसे बहुत से लोगों को कायर, डरपोक और विलासी बना दिया था। प्रेमचंद ऐसे लोगों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी करते हैं।

- यह कहानी वातावरण को अभिव्यक्त करने वाली है, इसलिए इसमें संवाद कम हैं; किंतु जो हैं, वे व्यंग्यात्मक, चुटीले तथा कहानी को गति देने वाले हैं। उदाहरण के लिए बेगम साहिबा के संवाद उनकी मन:स्थिति–क्रोध, झल्लाहट, विवशता, बेचैनी आदि– को प्रकट करते हैं। मिरज़ा साहब के अपमानित होने का डर, उनकी चापलूसी और झूठी सहानुभूति उनके संवादों से ही प्रकट होती है।
- कहानी में उर्दू और फ़ारसी के शब्दों का भरपूर प्रयोग है। यह शब्द-चयन तत्कालीन परिवेश तथा जीवन-शैली को प्रकट करता है। भाषा और संवाद-योजना स्वाभाविक है, कृत्रिम नहीं।
- कहानी में अनेक मुहावरे तथा लोकोक्तियों का रचनात्मक प्रयोग विषयवस्तु, परिवेश तथा उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्णत: सार्थक सिद्ध होता है।

आइए समझें

- 'शतरंज के खिलाड़ी' प्रेमचंद की एक प्रतीकात्मक कहानी है। व्यवस्था की त्रुटियों-ख़ामियों को कहानीकार ने पात्रों एवं संवादों के माध्यम से बख़ूबी उजागर किया है।
- कहानी तत्कालीन परिवेश से परिचय कराती है और भारतीय इतिहास को और गहराई से पढ़ने-समझने के लिए प्रेरित करती है।
- कहानी हमारे भाषा-ज्ञान का विस्तार करती है। नए-नए शब्दों, प्रयोगों तथा अवधारणाओं से अवगत कराती है।
- संवादों को चुटीला बनाने वाले मुहावरों-लोकोक्तियों के प्रयोगों की समझ पैदा करती है।
- हिंदुस्तानी भाषा के स्वरूप एवं वैशिष्ट्य से हमारा परिचय कराती है। भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्द-प्रयोगों से भाषा में प्रभाव पैदा करने की कला का बोध कराती है।
- गद्य-भाषा का सौंदर्य तथा उसका लालित्य उसकी शैली के वैशिष्ट्य में, पात्रानुकूल भाषा-चयन एवं प्रयोग में ही होता है।
- देशकाल का चित्रण कहानी को जीवंत एवं प्रामाणिक बना देता है। संवाद कहानी को गतिशील बना देते हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- हिंदुस्तानी भाषा : जो हिंदी और अरबी-फ़ारसी के लोकप्रचलित शब्दों से बनी है।
- तत्सम, तद्भव, क्षेत्रीय शब्द।
- इस कहानी में मुहावरे-लोकोक्तियाँ अपने साथ समाज और संस्कृति को तो लाते ही हैं, परिवेश को जीवंत एवं विश्वसनीय बनाने का काम भी करते हैं।

संप्रेष्य

कहानी यह संदेश देती है कि सुख-सुविधाओं में डूबे, संघर्ष से बचते रहने वाले, परस्पर भिन्न बने रहने वाले, व्यक्तिगत राग के शिकार लोग ही व्यक्ति और देश– दोनों को डूबो देते हैं। ऐसी बुरी आदतों का असर जनसामान्य पर तुरंत होता है। शासक का धर्म और दायित्व क्या है– प्रेमचंद इसकी ओर भी संकेत करते हैं। उसका आचरण कैसा होना चाहिए, राज्य तथा प्रजा के लिए उसकी संघर्षशीलता क्यों अपेक्षित है, गुलामी से बचने के लिए राजा को राजधर्म का निर्वाह कैसे करना चाहिए– ऐसे अनेक संदेश इस कहानी से संप्रेषित होते हैं।

यह भी जानिए

- प्रेमचंद की कहानियों में अनेक प्रकार की समस्याओं, मनोवैज्ञानिक दुविधाओं, प्रवृत्तियों तथा व्यवहारों को बख़ूबी वर्णित किया गया है। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय जनता की स्थितियों एवं समस्याओं का विश्वकोश है।
- यह कहानी प्रेमचंद की अन्य कहानियों से भिन्न एक नवीन समस्या को उजागर करती है। नवाबों की अकर्मण्यता के कारण शहर अंग्रेज़ों के कब्ज़े में कैसे गया और वहाँ के निवासी कैसे गुलाम बन

गए– इसका चित्रण प्रेमचंद ने अत्यंत प्रभावी एवं बोधगम्य रूप में किया है।

- उस समय के परिवेश, नवाबी आचरण, जनसामान्य की दशा तथा ऐतिहासिक घटनाक्रम आदि की जानकारी इतिहास-ग्रंथों से भी ली जा सकती है।

योग्यता बढ़ाएँ

- अरबी-फ़ारसी शब्दावली का प्रयोग, मुहावरे-लोकोक्तियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति कहानी को कैसे संप्रेष्य बनाकर प्रासंगिक बना देती है– इस ध्यान देना आवश्यक है।
- प्रेमचंद के साहित्य-सरोकारों का संबंध व्यापक समाज, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्रीय चेतना तथा माननीय आचरण से रहा है– यह जानिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- कहानी के तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए इस कहानी को पढ़िए।
- कहानी में अभिव्यक्त परिवेश पर विशेष ध्यान दीजिए।
- कहानी की प्रतीकात्मकता को अच्छी तरह से हृदयंगम कीजिए।
- मार्मिक स्थलों को पहचानिए।
- 'हिंदुस्तानी' भाषा के लक्षणों को जानकर कहानी की भाषागत विशेषताओं पर ध्यान दीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. मीर और मिरज़ा की चारित्रिक विशेषता का ज़िम्मेदार आप किसे मानते हैं और क्यों? उल्लेख कीजिए।
2. कहानी के अंत का आप पर क्या प्रभाव पड़ता है? तर्कसहित 25-30 शब्दों में टिप्पणी लिखिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   निम्नलिखित में से कौन-से विकल्प में मुहावरे का प्रयोग नहीं है–

   (क) रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी। ☐

   (ख) यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे। ☐

   (ग) किसी के कानों पर जूँ न रेंगती थी। ☐

   (घ) नवाब साहब इस वक्त ख़ून के आँसू रो रहे होंगे। ☐